मुद्रा के मूल्य का अर्थ

(Meaning of Value of Money)

वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य को हम मुद्रा के रूप में व्यक्त करते हैं, क्योंकि मुद्रा सामान्य मूल्य-मापक (Common denominator) का काम करती है। लेकिन मुद्रा का मूल्य क्या है? वास्तव में देखा जाय तो मुद्रा का अपने आप में कोई महत्त्व नहीं है। मुद्रा का महत्त्व इसलिए है कि इसके माध्यम से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदी जा सकती हैं अथवा मुद्रा में क्रय-शक्ति (Purchasing Power) होती है। अतः मुद्रा की क्रय-शक्ति ही उसका मूल्य है। क्राउथर (Crowther) के शब्दों में, "मुद्रा जो खरीदेगी वही इसका मूल्य है।" (The value of money is what it will buy.) इसी प्रकार राबर्ट्सन (Robertson) के अनुसार, "मुद्रा के मूल्य से हमारा मतलब वस्तुओं की उस मात्रा से है जो साधारणतः मुद्रा की एक इकाई से विनिमय में प्राप्त होती है।" (By value of money we mean the amount of things in general which will be given in exchange for a unit of money.)

उदाहरण के लिये, यदि १ रुपये में एक पेंसिल या २ सेव अथवा आधा किलो चीनी मिलती हो तो हम कह सकते हैं कि एक रुपये का मूल्य एक पेंसिल या २ सेव अथवा आधा किलो चीनी के बराबर है।

अतः हम देखते हैं कि जिस प्रकार वस्तुओं या सेवाओं का मूल्य मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है उसी प्रकार मुद्रा का मूल्य भी वस्तुओं या सेवाओं के रूप में व्यक्त किया जाता है। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन होने से मुद्रा के मूल्य में भी परिवर्तन होता है। **वास्तव में वस्तुओं के मूल्य में एवं मुद्रा के मूल्य में विपरीत सम्बन्ध है।** उदाहरण के लिये, मान लिया जाय कि एक कलम का मूल्य पहले ४ रुपये था, किन्तु अब मूल्य बढ़कर ८ रुपये हो गया है। यहाँ कलम के मूल्य में वृद्धि होने से मुद्रा के मूल्य में कमी हुई है क्योंकि जिस कलम के लिए पहले ४ रुपये देने पड़ते थे ठीक उसी कलम के लिए अब ८ रुपये देने पड़ते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि पहले ४ रुपये की जो क्रय-शक्ति थी वही क्रय शक्ति अब ८ रुपये की है। पहले यदि ८ रुपये खर्च किये जाते तो २ कलमें मिल सकती थीं; लेकिन कलम के मूल्य बढ़ने से अब ८ रुपये में केवल एक ही कलम प्राप्त होती है। इसी प्रकार यदि कलम का मूल्य घटकर २ रुपये हो जाय तो मुद्रा का मूल्य बढ़ जायेगा क्योंकि अब २ रुपये में ही पहले ४ रुपये में मिलनेवाली कलम खरीदी जा सकती है। **इस प्रकार वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने से मुद्रा का मूल्य घटता है तथा वस्तु के मूल्य में कमी होने से मुद्रा का मूल्य बढ़ता है।**

Scanned with CamScanner

लेकिन प्रश्न यह है कि मुद्रा का मूल्य वस्तु के किस मूल्य के आधार पर मापी जाय। वस्तुओं का थोक मूल्य एवं खुदरा मूल्य दोनों होता है तथा दोनों मूल्यों में विभिन्नता होती है। मजदूरों की सेवाओं का मूल्य अथवा मजदूरी में भी विभिन्नता पायी जाती है। इसके परिणाम-स्वरूप मुद्रा की क्रय-शक्ति अथवा मूल्य में विभिन्नता हो सकती है। इस कठिनाई से बचने के लिए तीन प्रामाणिक मूल्यों (Standard Values) की धारणा की स्थापना की गयी है जिनके आधार पर मुद्रा के मूल्य को मापा जाता है :—

(१) **थोक मूल्य** (Wholesale Value) :—थोक बाजार में वस्तुओं के प्रचलित मूल्य को थोक मूल्य कहते हैं और इसके आधार पर मुद्रा का जो मूल्य तैयार किया जाता है उसे मुद्रा का थोक मूल्य (Wholesale Value of Money) कहते हैं। थोक मूल्य का संकलन करना बहुत आसान होता है और मुद्रा का मूल्य प्रायः इसी के आधार पर व्यक्त किया जाता है।

(२) **खुदरा मूल्य** (Retail Value) :—खुदरा बाजार में वस्तुओं के प्रचलित मूल्य को खुदरा मूल्य कहते हैं। खुदरा मूल्य पर ही दैनिक उपभोग में आनेवाली वस्तुओं की खरीद-बिक्री होती है। खुदरा मूल्य के आधार पर तैयार किया गया मुद्रा का मूल्य मुद्रा का खुदरा मूल्य (Retail Value of Money) कहलाता है। खुदरा मूल्य प्राप्त करने में कठिनाई होती है क्योंकि विभिन्न स्थानों पर ये अलग-अलग होते हैं तथा इनमें बहुत अधिक उतार-चढ़ाव आता रहता है।

(३) **श्रम मूल्य** (Labour Value) :—मुद्रा का जो मूल्य मजदूरी के आधार पर निश्चित किया जाता है उसे **मुद्रा का श्रम-मूल्य** (Labour Value of Money) कहते हैं। चूँकि विभिन्न प्रकार के मजदूरों की मजदूरी की दरों में काफी विभिन्नता पायी जाती है, अतः मुद्रा के श्रम-मूल्य को प्राप्त करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार मूल्य-स्तर मुख्यतः तीन होते हैं और उनके आधार पर मुद्रा का मूल्य भी अलग-अलग होता है।

Scanned with CamScanner